[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

**Sr. No. of Question Paper : 2296** **H**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhayein

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'जातीयता के गुण' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

**अथवा**

'साहित्य का उद्देश्य' निबंध के आधार पर प्रेमचंद की भाषा शैली पर विचार कीजिए।

P.T.O.

2. भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (12)

अथवा

'अदम्य जीवन' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

3. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'शायद' एकांकी की विशेषताएं लिखिए। (12)

अथवा

'वैष्णव जन' में मूल्यों के पतन और भ्रष्ट व्यवस्था को चित्रित किया गया है - स्पष्ट कीजिए।

4. 'उखड़े खंभे' शिल्प की दृष्टि से अत्यंत सशक्त रचना है - प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

लक्खा बुआ की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3)

(क) छोटी-छोटी पगडंडियों से होता हुआ यह स्वर कब्रों से टकराकर गूँज उठा और मानो कब्रों से आवाजें आने लगी। चौदह कब्रे- आँखों के सामने एकबारगी उनमें सोए क़ंकाल तड़प उठे और नाच उठे यातना ये व्याकुल भूख से तड़प-तड़पकर मरते हुए प्राणियों के चित्र। राह में एक वृद्ध अपनी चटाई पर बैठा करघा चला रहा था। हम लोग उसी के पास जाकर रुक गए। वृद्ध ने हमारी और दृष्टि उठाई। भट्टाचार्यजी ने कहा - 'दादा, आगरे से आये हैं यह, यहाँ का हाल देखने।

(ख) मेरे भ्रमण की भी एकान्त साथिन भक्तिन ही रही है। बदरी-केदार आदि के ऊँचे-नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते में जैसे वह हठ करके मेरे आगे चलती रही है, वैसे ही गांव की धूल भरी पगडण्डी पर मेरे पीछे रहना नहीं भूलती। किसी भी परिस्थिति में, किसी भी समय, कहीं भी जाने के लिए प्रस्तुत होते ही मैं भक्तिन को छाया के समान साथ पाती हूँ।

(ग) भाषा के विषय में कहा जाता है कि यह सम्प्रेषण का एक माध्यम है। किन्तु भाषा का प्रयोग और क्षेत्र यहीं तक सिमित नहीं है। वस्तुतः भाषा का सवाल भावना के साथ जुड़ा है। इसलिए भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम मात्र नहीं है बल्कि भाषा एक संस्कार है। हमारे व्यक्तित्व, बल्कि सम्पूर्ण संस्कृति के निर्माण में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। समाज के बीच भावात्मक एकता स्थापित करने और उसे बनाए रखने में भी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(घ) जो वाचा दृढ़ रखता है, जो आचार दृढ़ रखता है, जो मन दृढ़ रखता है, उसकी जननी धन्य है। वैष्णव जन न तो अशान्त हो सकता है और न अस्थिर। वह सत्य को देख लेता है और फिर निश्चल हो जाता है। भयंकर से भयंकर संकट में भी डगमगाता नहीं क्योंकि वह सत्य का संघर्ष है और सत्य का संघर्ष कठोर और लम्बा होता है।

(ङ) बिसनाथ लक्खा बुआ के घर पहली बार गए तो 6-7 साल के रहे होंगे। कंचा-गोली, गुल्ली-डंडा खेलते-खेलते निकल गए। लक्खा बुआ के घर से ही पच्छूँ टोला शुरू होता है। फूस का घर, सामने लिपा-पुता ऊँची जमीन डेढ़ फुट ऊपर, चबूतरा, घर में घुसते ही एक कमरा - फिर पीछे आँगन, अंदर रसोई। कमरे में दो चारपाइयाँ। ऊपर साफ-सुथरी चादरें बिछीं।